नीतिनिबंध।

अध्ययन और तप।

प्राचीन समय से सहस्रों मतिमानों ने विद्या की प्रशंसा की है और अधिक समय इस के अध्ययन करने में व्यय किया है और जो जो फल पुराचीन काल में अथवा इस समय में विद्याध्ययन में उद्योग करने से प्राप्त हुये हैं सकल सहृदयों पर भली भांति प्रगट हैं। एक से एक बढ़ कर विद्वान और मतिमान, भारत, यूनान, चीन इत्यादि में हो गये हैं। जिन्हों ने क्या कुछ नहीं किया। इस में कोई सन्देह नहीं कि कोई मनुष्य ऐसा न मिलेगा जो विद्या की पदवी सर्वोत्कृष्ट न रक्खे। विद्या से हमारा यही अभिप्राय नहीं कि किसी भाषा के बहुत से शब्द स्मरण हो जांय अथवा किसी विद्या की हम कल्पित पुस्तक निर्माण कर लें। बरन विद्या से अभिप्राय वह योग्यता है जिस से मनुष्य किसी वस्तु का भेद जानने पर समर्थवान हो। इसी प्रकार बहुधा लोगों ने तप की पदवी भी बड़ी निश्चित की है और प्रत्येक समय में सहस्रों साधु, महात्मा, और तपस्वी हुये हैं। जिन का नाम पृथ्वी पर आज तक प्रगट है बरन सर्वदा स्थिर रहेगा। सहस्रों ईश्वरीयमार्गदर्शक सज्जन ऐसे हुये हैं जिन्हों ने सर्वथा यही शिक्षा की है कि सब काम छोड़ कर राम का नाम लो अथवा गोबिन्द का स्मरण करो। सम्पूर्ण बातें संसार की केवल छल की हैं मनुष्य को समुचित है कि सब से निवृत्त हो कर अपने उत्पादक का भजन करे।

यह दोनों बातें ऐसी हैं कि मनुष्य का चित्त अवश्य कहेगा कि प्रत्येक मनुष्य का इन दोनों का प्राप्त करना प्रथम कर्तव्य है। पर प्रायः लोग इन दोनों के बिषय में बिचार करने में बड़ी२ भूल कर जाते हैं। और बेढंग इस में उलझ कर उद्विग्न हो बैठते हैं।